Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान हाई कोर्ट

कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं लिपिक ग्रेड - II

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

भाग – 2

राजस्थान का इतिहास, कला संस्कृति एवं भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

RAJASTHAN HIGH COURT LDC

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का भूगोल	
1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	1
2.	राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग	7
3.	राजस्थान की जलवायु	17
4.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	24
5.	राजस्थान की झीलें	32
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	36
7.	राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति	40
8.	राजस्थान वन स्थिति रिपोर्ट	43
9.	राजस्थान में कृषि	45
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	50
9.	राजस्थान में पशुधन	58
10.	राजस्थान की जनसंख्या	63
11.	राजस्थान की जनजातियॉ	65
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास	
	• परिचय	69
	• प्राचीन सभ्याताएँ	72
	• महाजनपद काल	76
	• मौर्यकाल	77
	• मौर्योत्तर काल	77
	• गुप्तकाल	77
	• गुप्तोत्तर काल	78

2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 79

- प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ
- राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ

3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास

- 1857 की क्रांति 120
- प्रमुख किसान आन्दोलन 122
- प्रमुख जनजातीय आन्दोलन 126
- प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन 127
- राजस्थान का एकीकरण 131

4. राजस्थान कला एवं संस्कृति

- किले एवं स्मारक 136
- राजस्थान के त्यौहार 146
- राजस्थान के लोक देवता 152
- राजस्थान की लोक देवियाँ 157
- राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 160
- राजस्थान के लोकगीत 166
- राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 167
- राजस्थान के संगीत 168
- राजस्थान के लोकनाट्य 169
- राजस्थान के लोक नृत्य 172
- राजस्थान की चित्रकला 176
- राजस्थान की हस्तकलाएँ 180
- राजस्थान का साहित्य 184
- राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 190
- राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र 192
- आभूषण व वेशभूषा 196
- राजस्थान के धार्मिक स्थल 199

राजस्थान की उत्पत्ति

अंगारालैण्ड
पैंजिया का उत्तरी भाग जिससे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ है ।

गोंडवानालैण्ड
पैंजिया का दक्षिणी भाग जिससे दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिणी एशिया, ऑस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ है ।

टेथिस सागर
यह एक भूसन्नति है जो अंगारालैण्ड व गोंडवानालैण्ड के मध्य स्थित है ।

Note– राजस्थान का निर्माण

GT

G – गोंडवाना लैण्ड
अरावली
हाडौती

T – टेथिस सागर
मरूस्थल
मैदान

भौगोलिक प्रदेश

अरावली व हाडौती भारत के प्रायद्वीप पठार का हिस्सा है जबकि मरूस्थल व मैदानी भाग भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा है ।

A- राजस्थान : स्थिति, विस्तार एवं आकार

भारत

उत्तर पश्चिम	

	उत्तर पूर्व

विश्व

दक्षिण पश्चिम	

एशिया

- ग्लोबीय स्थिति में राजस्थान उत्तर पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है ।

B- विस्तार

- अक्षांश – $23^0 3'$ से $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश
- देशांतर – $69^0 30'$ से $78^0 17'$ पूर्वी देशांतर
- क्षेत्रफल – 3,42,239.74 वर्ग किमी.
  (1,32,140 वर्ग मील)

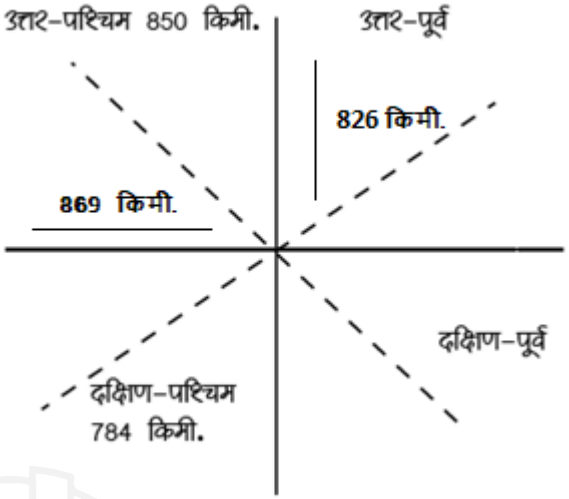

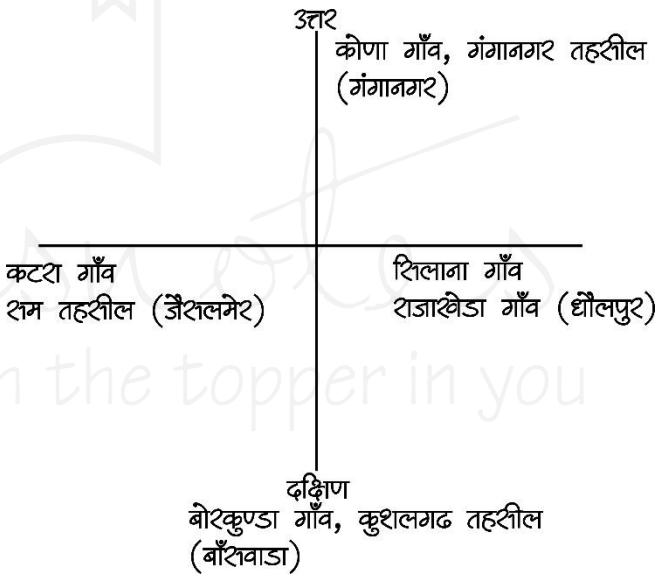

C- आकार

Rhombus – T. H. हैडले ने कहा
विषम चतुष्कोणीय (रोहम्बस)
पतंगाकार

राजस्थान के क्षेत्रफल संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

1. राजस्थान का क्षेत्रफल 342239.74 वर्ग किमी है ।
2. यह भारत के क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत है ।
3. विश्व क्षेत्रफल का राजस्थान 0.25 प्रतिशत धारण करता है ।
4. राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है ।
5. राजस्थान का सबसे बडा जिला जैसलमेर है । 38401 वर्ग किमी इसका क्षेत्रफल है ।
6. जैसलमेर सम्पूर्ण राजस्थान का 11.22 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
7. धौलपुर राजस्थान का सबसे छोटा जिला है जिसका क्षेत्रफल 3034 वर्ग किमी है ।
8. धौलपुर सम्पूर्ण राज्य का .89 प्रतिशत क्षेत्रफल धारण करता है ।
9. जैसलमेर धौलपुर से 12.67 गुणा बडा है ।
10. कर्क रेखा राज्य के डुंगरपुर की सीमा को छूते हुए तथा बांसवाडा के मध्य से होकर गुजरती है ।
11. कर्क रेखा की लम्बाई राज्य में 26 किमी है ।
12. कर्क रेखा पर सबसे लम्बा दिन 13 घंटे 27 मिनट का होता है जो 21 जून को होता है । यह कर्क संक्रांति कहलाता है ।
13. राज्य में पूर्व से पश्चिम समय अंतराल 35 मिनट 8 सैकेण्ड का है ।
14. राज्य का मध्य गांव गगराना नागौर है ।

प्रमुख देश		राजस्थान का क्षेत्रफल (बडा)
जर्मनी	–	बराबर
जापान	–	बराबर
ब्रिटेन	–	दोगुना
श्रीलंका	–	5 गुना
इजराइल	–	17 गुना

राजस्थान के क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बडे एवं सबसे छोटे जिले

बडे व छोटे जिले

जैसलमेर (38401 km^2)	धौलपुर (3034 km^2)
बीकानेर (30247 km^2)	दौसा (3432 km^2)
बाडमेर (28387 km^2)	डूँगरपुर (3770 km^2)
जोधपुर (22850 km^2)	राजसमन्द (3860 km^2)
नागौर (17716 km^2)	प्रतापगढ (4449 km^2)

(c) राजस्थान की सीमाः-

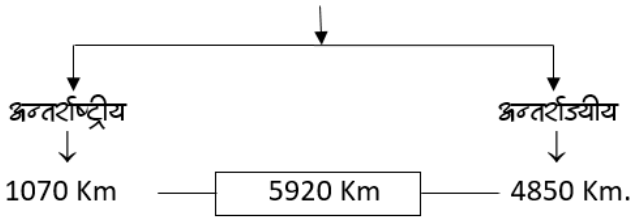

अन्तर्राज्यीय सीमा एवं उन पर स्थित जिले

सीमा– 4850 किमी.

पडोसी राज्य	उनकी सीमा पर राजस्थान के जिले
पंजाब (89 किमी.)	हनुमानगढ, गंगानगर
हरियाणा (1262 किमी.)	जयपुर, भरतपुर, हनुमानगढ, सीकर, चुरू, झुंझुनु, अलवर
उत्तरप्रदेश (877 किमी.)	भरतपुर, धौलपुर
मध्यप्रदेश (1600 किमी.)	धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाडा, कोटा, बांसवाडा, बांरा, झालवाड, प्रतापगढ, चित्तोडगढ
गुजरात (1022 किमी.)	बाडमेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, डुंगरपुर, बांसवाडा

- भारत के मानचित्र में निरपेक्ष स्थिति उत्तर–पश्चिम में है ।
- भारत मे किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति – नागपुर (महाराष्ट्र) से ज्ञात की जाती है ।
- राजस्थान में किसी भी स्थान की निरपेक्ष स्थिति मेडता (नागौर) से ज्ञात की जाती है ।

सूर्य की किरणों की निरपेक्ष स्थिति

- सूर्य की सर्वाधिक सीधी किरणों वाला जिला – बाँसवाडा (21 जून)
- सर्वाधिक तिरछी किरणों वाला जिला – श्री गंगानगर (22 दिसम्बर)
- रात व दिन की अवधि बराबर – 21 मार्च, 23 सितम्बर
- सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त – सिलाना (धौलपुर)
- सबसे अन्त में सूर्योदय व सूर्यास्त – कटरा गाँव (राम, जैसलमेर)

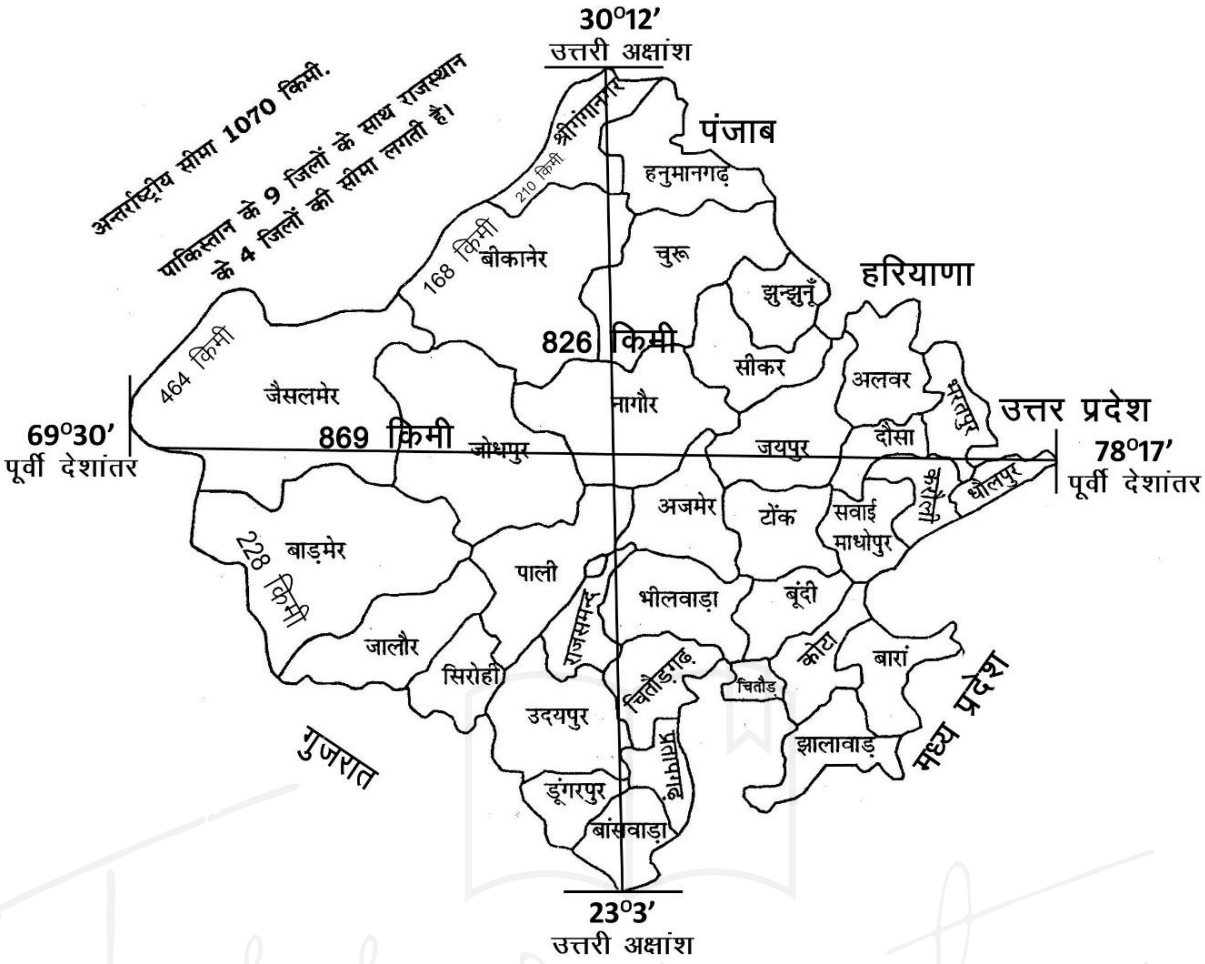

नोट –

(1) राजस्थान के वे जिले जो दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैः–

- हनुमानगढ – पंजाब . हरियाणा
- भरतपुर – हरियाणा . U.P.
- धौलपुर – U.P. + M.P.
- बाँसवाडा – M.P. गुजरात

(2) कोटा व चित्तौडगढः– राजस्थान के वे जिले हैं जो एक राज्य (M.P.) से दो बार सीमा बनाते हैं।

(3) कोटा :– राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है वह अविखण्डित है।

(4) चित्तौडगढः– राजस्थान का वह जिला है जो राज्य के साथ दो बार सीमा बनाता है व विखण्डित है।

(5) भीलवाडाः– चित्तौडगढ को 2 भागो में विखण्डित करता है।

पाक प्रान्त

- पंजाब
  - बहावलनगर
  - बहावलपुर
  - रहीमयारखानपुर
- सिन्ध
  - घोटक्की
  - सुक्कर
  - संधार
  - खैरपुर
  - अमरकोट
  - थारपारकर

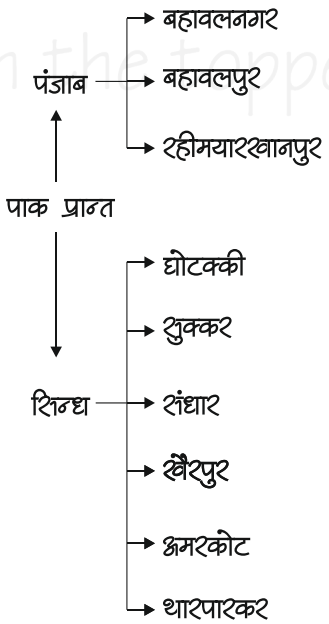

अन्तर्राज्यीय सीमा पर

सर्वाधिक सीमा
झालावाड (560 किमी.)
(M.P.)

सबसे कम
बाड़मेर (14 किमी.)
(गुजरात)

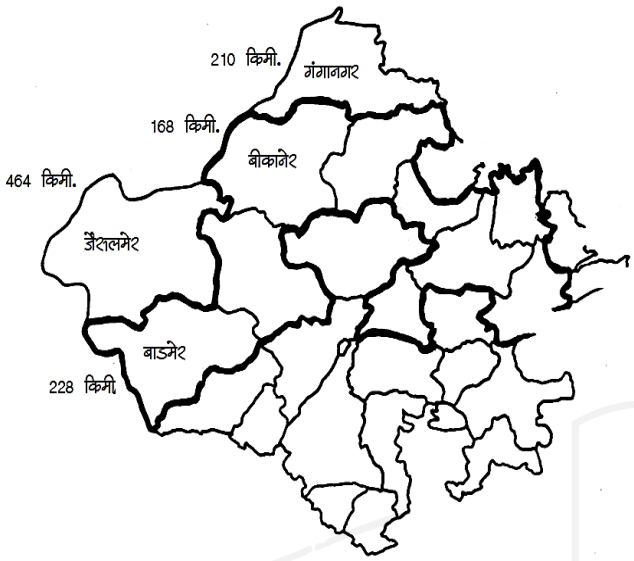

- 25 जिले : राजस्थान के सीमावर्ती जिले
- 23 जिले : अन्तर्राज्यीय सीमावर्ती
- 4 जिले : अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती
- 2 जिले : अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमावर्ती (श्रीगंगानगर . बाड़मेर)
  8 जिले : राजस्थान के वे जिले जो अन्तः स्थलीय (Land locked) सीमा बनाते हैं ।

पाली सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है । जो निम्न हैं –
बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, नागौर ।

अजमेर :- चित्तौड़गढ के बाद राजस्थान का दूसरा विखण्डित जिला
राजसमन्द :- राजसमन्द अजमेर का दो भागों में विखण्डित करता है ।
इसका जिला मुख्यालय इसके नाम से नहीं है ।
राजनगर राजसमन्द का जिला मुख्यालय है ।
नागौर :- नागौर सर्वाधिक संभाग मुख्यालयों के साथ सीमा बनाता है ।
(जयपुर, अजमेर, जोधपुर, बीकानेर)

सीमावर्ती विवाद

मानगढ हिल्स विवाद
स्थिति = बाँसवाड़ा
विवाद = राजस्थान–गुजरात के मध्य

1. पाकिस्तान का बहावलपुर का सर्वाधिक सीमा गंगानगर के साथ बनाता है ।
2. न्यूनतमक सीमा बाड़मेर के साथ बनाता है ।
3. पाकिस्तान के 9 जिले भारत के साथ सीमा बनाते हैं ।
4. पाकिस्तान के 6 जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं ।
5. भारत के 4 जिले पाकिस्तान के साथ सीमा बनाते हैं ।
6. जैसलमेर सर्वाधिक सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
7. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
8. नाम– सर सिरील रेड रेडक्लिफ रेखा
9. निर्धारण तिथि – 17 अगस्त 1947
10. शुरूआत – हिन्दूमलकोट
11. अंत – शाहगढ (बाड़मेर)
12. राजस्थान की कुल सीमा का 18% (1070 किमी.) है।
13. पाकिस्तान प्रान्त राज्य = 2 (पंजाब व सिन्ध)
14. श्रीगंगानगर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सबसे निकटतम जिला मुख्यालय है ।
15. बीकानेर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा पर सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
16. धौलपुर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय है ।
17. बीकानेर सबसे कम सीमा पाकिस्तान के साथ बनाता है ।
18. शुरूआत – हिन्दूमलकोट
19. अंत – शाहगढ(बाड़मेर)

Start — हिन्दुमलकोट (श्रीगंगानगर) 210 किमी.
↓
बीकानेर 168 किमी. (Minium)
↓
जैसलमेर 464 किमी. (Maxium)
↓
End — शाहगढ (बाड़मेर) 228 किमी.

नवीनतम जिले

26 अजमेर (1 नवम्बर, 1956)
27 धौलपुर (15 अप्रैल, 1982)
28 बारां (10 अप्रैल 1991)
29 दौसा (10 अप्रैल 1991)
30 राजसमंद (10 अप्रैल 1991)
31 हनुमानगढ (12 जुलाई 1994)
32 करौली (19 जुलाई 1997)
33 प्रतापगढ (26 जनवरी 2008)

राजस्थान के प्रादेशिक के परिवर्तन का स्वरूप एवं वर्तमान नाम

प्राचीन नाम	बदला स्वरूप	वर्तमान नाम
योद्धेय	जोहयावाटी	गंगानगर
जांगल	भटनेर	बीकानेर
अहिच्छत्रपुर	अहिपुर	नागौर
गुर्जर	गुरजान्ना	मण्डोर-जोधपुर
शाकंभरी सांभर	अजयमेरू	अजमेर
श्रीमाल स्वर्णगिरि	गेलोर भीनमाल	बाडमेर
वल्ल	डुंगल	जैसलमेर
अर्बुद	चन्द्रावती	सिरोही
विराट	रामगढ	जयपुर
शिवि	चित्तौड	उदयपुर
कांठल	देवलिया	प्रतापगढ
पालन	दशपुर	झालावाड
व्याघ्रावाट	वांगड	बांसवाडा
जाबालीपुर	स्वर्णगिरि	जालौर
कुरू		भरतपुर, करौली
शौरसेन		धौलपुर
हयहय		कोटा, बूंदी
चंद्रावती		आबू, सिरोही
छप्पन मैदान		प्रतापगढ, बांसवाडा के छप्पन ग्राम समूह
मेवल		डूंगरपुर, बांसवाडा के बीच का भाग
ढूंढाड		जयपुर
थली		चुरू, सरदार शहर
हाडौती		कोटा, बूंदी, झालावाड
शैखावटी		चरू, सीकर, झुंझनू

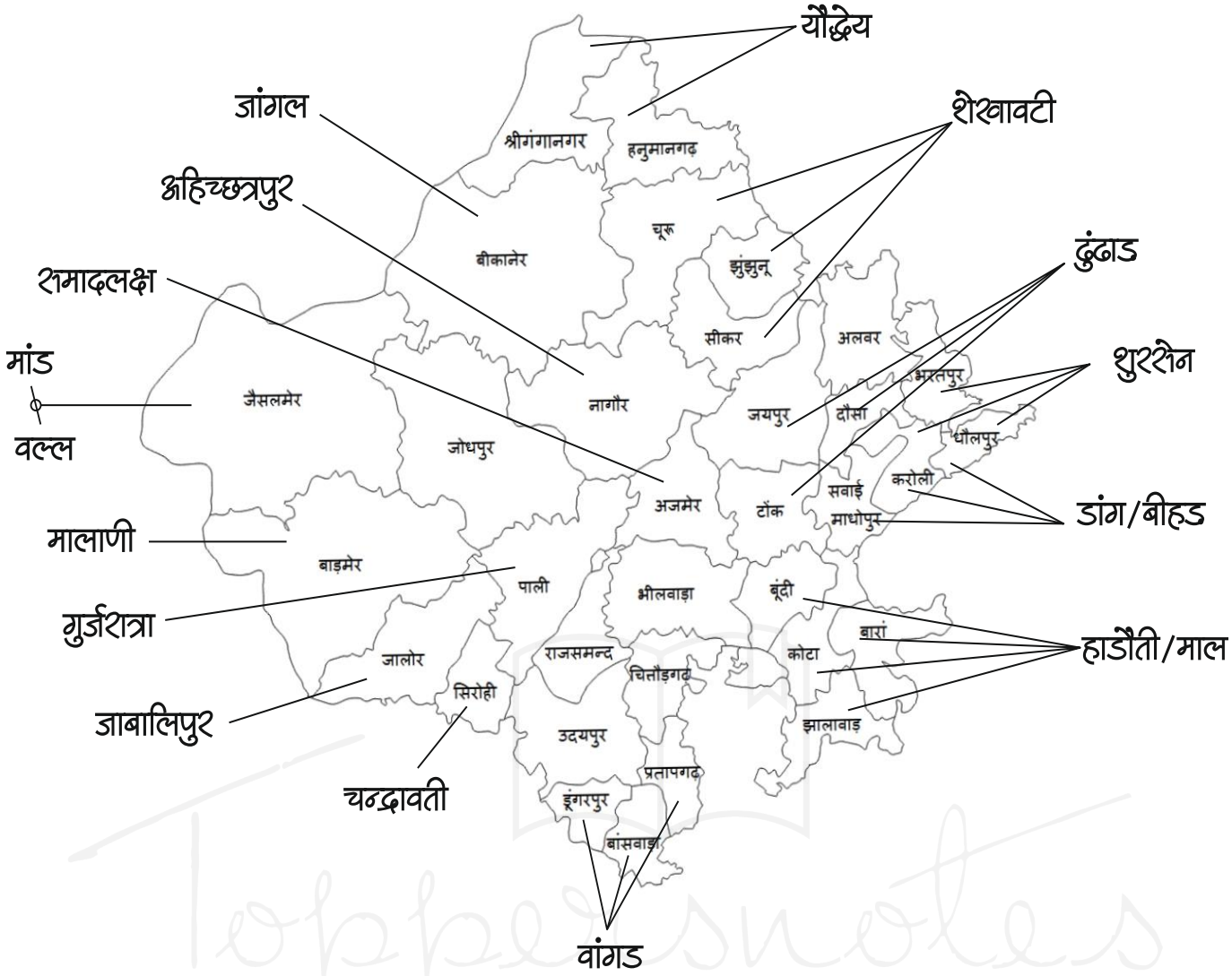

यौद्धेय
जांगल
शेखावटी
अहिच्छत्रपुर
ढुंढाड
स्रमादलक्ष
शुरसेन
मांड
वल्ल
डांग/बीहड
मालाणी
हाडौती/माल
गुर्जरात्रा
जाबालिपुर
चन्द्रावती
वांगड
श्रीगंगानगर
हनुमानगढ़
चूरू
बीकानेर
झुंझुनू
सीकर
अलवर
भरतपुर
जैसलमेर
नागौर
जयपुर
दौसा
धौलपुर
जोधपुर
अजमेर
टोंक
सवाई माधोपुर
करौली
बाड़मेर
पाली
भीलवाड़ा
बूंदी
बारां
कोटा
जालोर
राजसमन्द
चित्तौड़गढ़
सिरोही
झालावाड़
उदयपुर
प्रतापगढ़
डूंगरपुर
बांसवाड़ा

राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग
(Physical Regions & Divisions

भूमिका: भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय पक्षों को संमाहित किया जाता है । किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तम्भ है– 'भौतिक प्रदेश'

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति इत्यादि में औसत आन्तरिक समरूपता पायी जाती है ।

निष्कर्ष एवं समसामयिक पक्ष : उपर्युक्त के समग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सार रूप में यह निरूपति किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, औद्योगिकरण निर्वनीकरण, मानदीय हस्तक्षेप इत्यादि के कारण भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं जिसे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं भौतिक प्रदेशो के संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है ।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशो को उच्चावच एवं धरातल के आधार पर मोटे तौर पर चार भागों में एवं विभिन्न उप विभागों मे विभक्त किया जा सकता है ।

1. पश्चिम मरूस्थलीय प्रदेश
   - शुष्क रेतीला प्रदेश (मरूस्थल)
   - लूणी–जवाई मैदान (लूणी बेसिन)
   - शेखावटी प्रदेश (बांगर प्रदेश)
   - घग्घर का मैदान
2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश – उपविभाजन
   - उत्तरी अरावली
   - मध्य अरावली
   - दक्षिणी अरावली
3. पूर्वी मैदान प्रदेश – उपविभाजन
   - बनास बेसिन
   - चम्बल बेसिन
   - मध्य माही बेसिन (छप्पन का मैदान)
4. दक्षिणी–पूर्वी प्रदेश (हाडौती प्रदेश) उपविभाजन
   - अर्द्धचंद्राकर पर्वत श्रेणियां
   - नदी भ्रमित मैदान
   - शाहबाद का उच्च स्थल
   - झालावाड का पठार
   - डग–मंगधार का उच्च क्षेत्र

भौतिक प्रदेशों की सामान्य जानकारी

क्षेत्र	क्षेत्रफल	जनसंख्या	जिले	मिट्टी	जलवायु
मरूस्थल	61.11 प्रतिशत	40 प्रतिशत	12	बलुई	शुष्क व अर्द्धशुष्क
अरावली	9 प्रतिशत	10 प्रतिशत	13	पर्वतीय या वनीय	उपार्द्र
पूर्वी मैदान	23 प्रतिशत	39 प्रतिशत	10	जलोढ	आर्द्र
हाडौती, दक्षिण पूर्वी	6.89 प्रतिशत	11 प्रतिशत	7	काली या रेगूर	आर्द्र या अति आर्द्र

राजस्थान में भूगर्भीक संरचना भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में विशिष्ट है । यहां प्राचीनतम प्री – कैम्ब्रीयन युग के अवशेष अरावली के रूप में मौजूद है ।

यहाँ आद्य महाकल्प, पुराजीवी महाकल्प, प्राद्यजीवी महाकल्प एवं नवजीवी महाकल्प के साक्ष्य मौजूद है । बाप बोल्डर बैड (बाप गांव जोधपुर) – पुराजीवी महाकल्प के परमियन कार्बोनीफेरस युग के अवशेष मिले है जिन्हें हिमवाहित माना जाता है । कुछ गोलाश्म खंडो पर स्पष्ट लकीरें कें चिन्ह सुरक्षित है जो संभवतः हिमवाहित होने के कारण घर्षन उत्पन्न हुए है ।

भादुरा बालुकाश्म (जोधपुर) – यहां जीवाश्म युक्त बालुकाश्म मिले है जो बाप और भादुरा आस पास मिले है । इन बालुकाश्म का निर्माण सामुद्रिक अवस्था मे हुआ है ।

(I) उत्तरी–पश्चिमी मरूस्थलीय–प्रदेश

(i) निर्माणकाल–टर्शयरीकाल (क्वार्टनरी काल में प्लीस्टोसीन) इसे भारत का विशाल मरूस्थल अथवा थार के मरूस्थल के नाम से जाना जाता है ।

इसे मरू प्रदेश का विस्तार लगभग 175000 वर्ग किमी. है । जो सम्पूर्ण राजस्थान का 61.11% प्रतिशत है । इस मरूस्थल का राजस्थान कृषि आयोग के अनुसार सिरोही के अतिरिक्त 12 जिलों मे है । लेकिन वास्तविकता में सिरोही सहित 13 जिलों में है ।

श्री गंगानगर, हनुमानगढ, चुरू, बीकानेर, झुझनु, सीकर, जोधपुर, जालौर, बाडमेर, जैसलमेर, पाली, नागौर ।

राजस्थान में कुल

(ii) विस्तार:- मरूस्थलीय ब्लॉक–85

(a) लम्बाई – 640किमी.

(b) चौडाई – 300किमी.

(c) औसत ऊँचाई – 200–300 मीटर (औसत 250 मी.)

(iii) तापक्रम – ग्रीष्मकाल – 49°C
शीतकाल – -3°C
औसत – 22°C

(iv) वर्षा – 20 से 50 सेंटिमीटर तक होती है ।

(v) वनस्पति – जीरोफाइट या शुष्क वनस्पति पाई जाती है ।

(vii) मिट्टी – रेतीली बलुई मिट्टी

(iii) मरूस्थल का ढाल :-

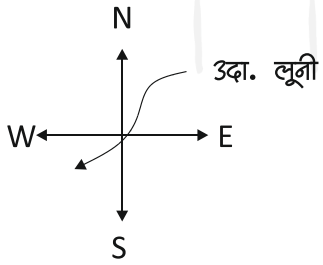

(iv) मरूस्थल का अध्ययन :-

मरूस्थल को अध्ययन की दृष्टि से 2 भागों में बाँटा जाता है ।

(a) शुष्क मरूस्थल (0-25cm)

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश (25-50cm)

नोट:–"25 cm. समवर्षा रेखा" मरूस्थल को शुष्क व अर्द्धशुष्क दो भागों में बॉटती है।

(a) शुष्क मरूस्थल

25 cm. से कम वर्षा वाले भौतिक प्रदेश को शुष्क मरूस्थल कहा जाता है ।

पश्चिम मरुस्थल का सबसे बडा जिला – जैसलमेर

पश्चिम मरुस्थल का सबसे छोटा जिला – झुन्झुनूँ

शुष्क मरूस्थल को पुनः दो भागो में बाँटा जाता है:-

बालूका स्तूप मुक्त (41.5%)

बालूका स्तूप युक्त (58.5%)

कारण :- पथरीला मरूस्थल जिसे "हमादा" कहा जाता है ।

विस्तार – जैसलमेर (max.) बाडमेर जोधपुर

पवन → मिट्टी → निक्षेपण → बालूका स्तूप

नोट:–बालूका स्तूप

जब पवन के द्वारा मिट्टी का निक्षेपण किया जाता है तो बनने वाली स्थलाकृति को बालूका स्तूप कहा जाता है जो सर्वाधिक जैसलमेर जिले में है ।

बालूका स्तूप को टीले/टीबे भी कहते है । जैसलमेर में इन्हें धरियन नाम से जाना जाता है ।

बालूका स्तूप के प्रकार

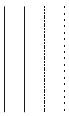

				प्रकार	सर्वाधिक
(i)		पवन ←	अर्द्धचन्द्राकार	बरखाना	शेखावटी (चूरू)
(ii)		पवन ← ←	समकोण	अनुप्रस्थ	बाडमेर, जोधपुर
(iii)		पवन ← ←	समान्तर	अनुदैर्ध्य/रेखीय	जैसलमेर
(iv)				तारानुमा	1. जैसलमेर 2. सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

(V) पेराबोलिक

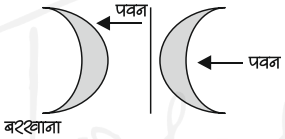

- बरखान के विपरीत या हेयरपिन जैसी आकृति का बालूकास्तूप "पेराबोलिक" कहलाते है ।

  नोटः- यह बालूकास्तुप राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाते हैं ।

(vi) सीफ (Seif)

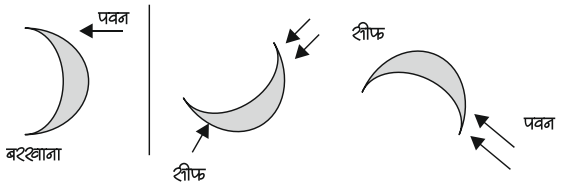

बरखान के निर्माण के दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन होता है तो बरखान की एक भुजा एक दिशा में आगे की ओर बढ जाती है जिसे सीफ कहा जाता है ।

(vii) शब काफीसज (Scrub Coppies)

मरूस्थल में झाडियों के पास पाए जाने वाले छोटे बालूका स्तूप

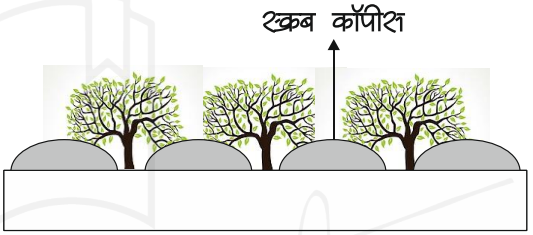

यह सर्वाधिक जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोटः- 1 बरखान – अनुप्रस्थ
2 सीफ – अनुदैर्ध्य/रेखीय
3 सर्वाधिक बालूका स्तूप – जैसलमेर
सभी प्रकार के बालूकास्तूप – जोधपुर

(b) अर्द्धशुष्क मरूस्थल या वांगड प्रदेश

25–50 सेमी वर्षा या शुष्क मरूस्थल व अरावली के मध्य का भौतिक प्रदेश अर्द्धशुष्क मरूस्थल कहलाता है ।
इसे अध्ययन की दृष्टि से पुनः 4 भागो में बॉटा जाता है:-

1. लूनी बेसिन
2. नागौर उच्च भूमि
3. शेखावाटी अन्तः प्रवाह
4. घग्घर बेसिन

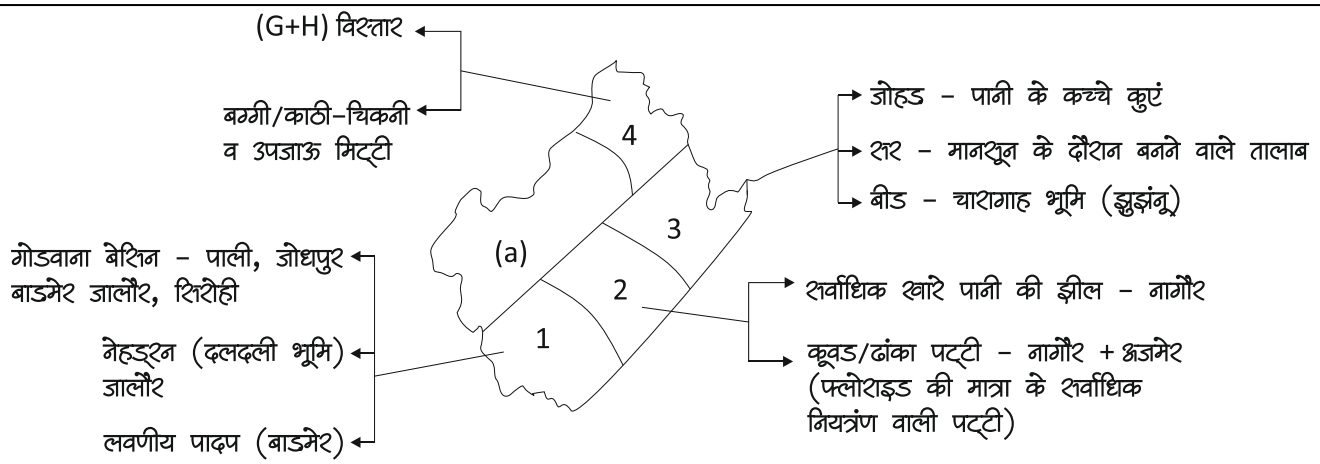

1. अर्द्धशुष्क मरुस्थल

(i) लूणी बेसिन /गोडवार प्रदेश

अजमेर → नागौर → पाली → जोधपुर → बाडमेर → जालौर

- लूणी बेसिन का पूर्वी क्षेत्र – काला भेरा क्षेत्र

(ii) नागौरी उच्च भूमि – यहाँ टेथिस सागर के अवशेष नहीं है क्योंकि यहाँ की चट्टानों में माइकोसिस्ट के अवशेष है ।

- परबतसर कुचामन नावां के अतिरिक्त कहीं भी पहाडियाँ नहीं है ।
- हरियल पक्षी नागौरी उच्च भूमि में ही पाया जाता है ।
- अजमेर व नागौर के मध्य का भाग – कूबड/बांका पट्टी

(iii) शेखावटी अन्तः प्रवाह – सीकर, चूरू, झुन्झुनूँ, जयपुर

- शेखावटी में पानी के कच्चे कुएँ – जोहड
- जोहड के गहरे भाग को पोंथी कहते है ।
- जयपुर में कुओं को बेर/बेरा कहते है ।

(iv) घग्घर का मैदान – गंगानगर व हनुमानगढ का क्षेत्र है । घग्घर नदी के क्षेत्र को नाली/पाह/बग्गी कहते है ।

पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश से संबंधित विशेष तथ्य

पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत रूप से जल संरक्षण की अनेक पद्धतियाँ पायी जाती है जो है:-

पद्धतियाँ

1. प्लाया/खडीन/ढाढ झील :-

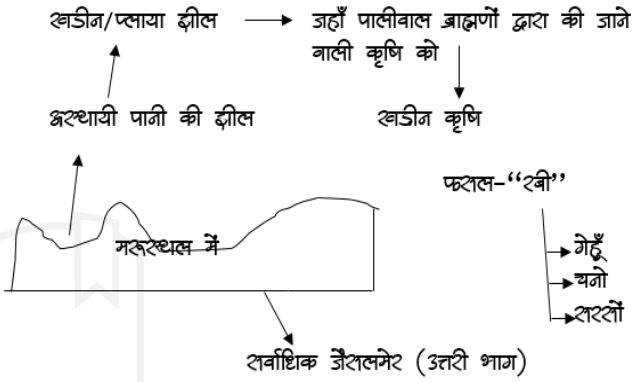

2. आगोर :- घर के आँगन में निर्मित जल संग्रहण के लिए बना टाका या झालरा आगोर कहलाता है ।

3. नाडी :- प्राकृतिक गड्ढे में जल का संग्रहण नाडी कहलाता है जिसके जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यो के लिए किया जाता है ।
नाडी विशेष रूप से जोधपुर में है ।

4. बावडी :- सामान्यतः सीढीनुमा चोकोर तालाब बावडी कहलाता है ।
बावडी शंक जाति द्वारा प्रारंभ की गई बावडियों का शहर – बूंदी

5. बेरा या बेरी :- खडीन या टोबा या नाडी से रिसने वाले जल के सदुपयोग के लिए इसके चारों ओर छोटे-छोटे कुएँ बना दिये जाते है जिन्हे जैसलमेर के आसपास के क्षेत्रों में बेरा या बेरी कहा जाता है ।

6. टोबा :- कृत्रिम रूप से निर्मित गड्ढे में जल संग्रहण टोबा कहलाता है ।

7. जोहड या खूँ :- शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाले कुएं जोहड या खूँ कहलाते है जो ढोबा या नाडी में रिसने वाले जल का सदुपयोग करने के लिए निर्मित किये जाते है ।

पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के प्रकार या क्षेत्र

पश्चिमी राजस्थान सामान्यत शुष्क एवं मरूस्थलीय क्षेत्र है फिर भी कहीं-कहीं जल की उपलब्धता के कारण यहाँ हरियाली मिलती है । इस तरह पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के भिन्न-भिन्न रूप निम्नांकित है-

1. मरूद्भिद् (XEROPHYTE)

अरावली के पश्चिम में पायी जाने वाली कंटीली झाडियाँ एवं वनस्पति मरूद्भिद कहलाती है । इनकी जडे अधिक गहरी तथा पत्तियाँ काँटो के रूप में होती है । जैसे बबूल, केर, बेर, नागफनी, आक, फोग, खेजडी, खींप, रोहिडा, झरबेरी इत्यादि ।

2. चाँधन नलकूप

जैसलमेर का वह क्षेत्र जहाँ मीठा भूमिगत पानी मिलता है। चाँधन नलकूप कहलाता है। इसे 'थार का घडा' भी कहते है । इसका कारण यहाँ पौराणिक सरस्वती नदी के अवशेष होना बताया जाता है ।

3. मरूद्यान या नखलिस्तान (OASIS)

मरूस्थल में वह क्षेत्र जहाँ जल की उपलब्धता होने के कारण वह क्षेत्र हरा-भरा हो जाता है, जैसे चाँधन नलकूप, श्री कोलायत झील ।

4. तल्ली/मरहो/बालसन

मरूस्थल में बालूका स्तूपों के मध्य मिलने वाली निम्न भूमि तल्ली/मरहो/बालसन कहलाती है ।

5. रन/टाट

मरूस्थल में लवणीय, दलदली व अनुपजाऊ भूमि को रन/टाट कहा जाता है । रन सर्वाधित जैसलमेर में पाए जाते है ।

नोट :-

प्रमुख रन	स्थान
तालछापर	चूरू
परिहारी	चूरू
फलौदी	जोधपुर
बाप	जोधपुर
थोब	बाडमेर
भाकरी	जैसलमेर
पोकरण	जैसलमेर (परमाणु परीक्षण 1974 (18 मई) 1998 (11,13 मई)

6. प्लाया/खारी झीलें/रेलिना या रेलाइना

बालूका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि में जल एकत्रित होने से निर्मित खारी झीलें प्लाया कहलाती है ।

7. लाठी सीरीज

जैसलमेर के उत्तर पूर्व में 60 किमी लम्बी भूगर्भीय जल पट्टी लाठी सीरीज कहलाती है। यह क्षेत्र 'सेवण या लीलोण' घास के लिए प्रसिद्ध है। करडी, धामण

8. मरूस्थलीकरण/मरूस्थल का मार्च

- मरूस्थल का आगे बढना/विस्तार
- दिशा:- SW - NE
- विस्तार सर्वाधिक :-हरियाणा
- सर्वाधिक योगदान:- बरखान
  क्योकि इनकी गति या स्थानान्तरण सर्वाधिक होता है ।

नोट :-

- Erg (अर्ग) → रेतीला
- रेग → दोनो (रेतीला + पथरीला)
- हमादा → पथरीला

निष्कर्षण

मरूस्थल में इसी हरियाली के कारण पेड-पोधे जीव जन्तु एवं मानव-जीवन मिलता है। यही कारण है कि थार का मरूस्थल विश्व का सर्वाधिक जैव-विविधता वाला मरूस्थल है ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

मावठ/महावठ

भूमध्यसागरीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभ से शीतकाल में होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है ।

यह रबी की फसल विशेषकर गेहूँ के लिए अमृत तुल्य होती है । इस कारण इसे "गोल्डन ड्रॉप्स (Golden Drops) भी कहा जाता है ।

रामगांव

जैसलमेर जिले में अवस्थित पूर्णतः वनस्पतिरहित क्षेत्र है जहाँ फिल्मों की शूटिंग होती है तथा यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। यहां 10 सेमी. बारिश होती है ।

आंकलगाँव

राजस्थान का एकमात्र ''वूड फॉसिल्स पार्क''(लकडी के जीवाश्म का) है। यहाँ 8 करोड वर्ष पुराने जूरासिक काल के लकडी के अवशेष मिले हैं । यह राष्ट्रीय मरूउद्यान का ही भाग है ।

मरूस्थलीकरण

मरूस्थल का निरन्तर प्रसार जिसके कारण भूमि का धीरे-धीरे बंजर होते जाना ही मरूस्थलीकरण कहलाता है । इसे 'मार्च पास्ट ऑफ डेजर्ट' भी कहते है ।

लघु मरूस्थल/थली

थार के मरूस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ के रन से बीकानेर तक विस्तृत है, लघु मरूस्थल कहलाता है । यह अपेक्षाकृत नीचा है । इसे बीकानेर के आस-पास के क्षेत्र में इसे थली तथा यहाँ के निवासियों को थलिया भी कहते है ।

धरियन

जैसलमेर जिले में कम आबादी वाले स्थानों पर पाये जाने वाले स्थानान्तरित बालुका स्तूप धरियन कहलाते है ।

सर/सरोवर

विशेष रूप से शेखावाटी एवं सामान्यतः पश्चिमी राजस्थान में तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है । जैसे-अलसीसर, मलसीसर, कोडमदेसर आदि ।

पीवणा

- पश्चिमी राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प पीवणा है ।
- पीवणा सर्प डंक नहीं मारता बल्कि रात्रि के सोते समय व्यक्ति को श्वास के द्वारा जहर देकर मार देता है ।

मध्यवर्ती अरावली प्रदेश

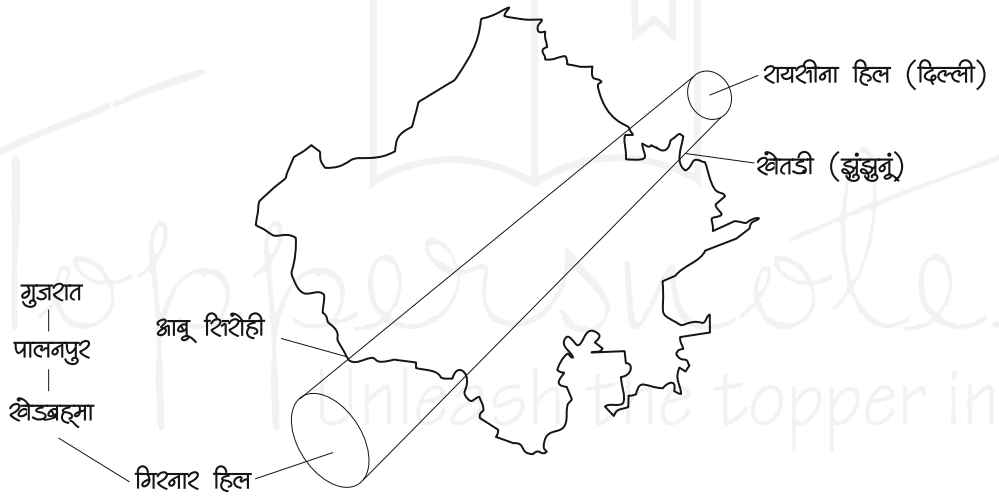

1. विस्तार - इसका विस्तार दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर, पालनपुर (गुजरात) से रायसिन्हा की पहाडी पालम (दिल्ली) तक 692 किमी है। राजस्थान में इसकी लम्बाई 550 किमी है । इसका विस्तार मुख्यतः 9 जिलों डूंगरपुर, बांसवाडा, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौडगढ, अजमेर, पाली, भीलवाडा में है ।
2. अरावली पर्वतमाला का उद्गम अरब सागर के मिनीकॉय द्वीपी से होता है ।
3. अरब सागर को अरावली का पिता माना जाता है ।
   - राजस्थान में अरावली खेडब्रह्म (सिरोही) से खेतडी (झुन्झुनू) तक
4. क्षेत्रफल - यह भू-भाग राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत धारण किये हुए है ।
5. इसकी औसत ऊँचाई 930 मी. है ।
6. जलवायु एवं वायुदाब- यहाँ उपार्द्र जलवायु पायी जाती है। औसत वायुदाब एवं औसत वायुवेग एवं औसत तापक्रम पाया जाता है ।
7. वर्षण- यहाँ 50-80 से.मी. के मध्य वर्षा होती है । 50 सेमी. वर्षा रेखा इसे पश्चिमी मरूस्थल क्षेत्र से अलग करती है ।
8. खनिज एंव चट्टानें:- यहाँ पर तांबा, लोहा, चाँदी, मैंगनीज आदि धात्विक खनिज एवं ग्रेनाइट, नील, सिस्ट इत्यादि प्राचीनतम चट्टानें मिलती है ।

9. प्रकृति– गोंडवाना क्षेत्र का यह भाग प्रीकेम्ब्रियन काल में निर्मित एवं अवशेषी वलीत पर्वत माला के रूप में है ।
10. मृदा– यहाँ पर पर्वतीय मिट्टी तथा पर्वतीय अपरदन से निर्मित काली तथा लाल मिट्टियाँ पायी जाती है ।
11. वनस्पति– यहाँ पर पर्वतीय वनस्पति जिनकी जडे कम गहरी होती है, पायी जाती है तथा यहाँ मुख्यत: मक्का की खेती होती है ।
12. उच्चावच– इस क्षेत्र में पहाड–पहाडी, डूँगर–डूँगरी, दर्रे या नाल पाये जाते है ।
13. सबसे प्राचीन वलित पर्वतमाला है ।
14. अबुल फजल ने अरावली को 'ईंट की गर्दन' कहा।
15. टॉड ने राजपूताना की सुरक्षा दीवार कहा ।
16. टॉड ने गुरुशिखर को 'संतों का शिखर' कहा है ।

अरावली की शब्दावली

- बीजासन – माण्डलगढ व भीलवाडा के मध्य
- मैना पहाडी – भरतपुर
- देवगिरी पहाडी – दौसा
- ऐसारणा पर्वत – पाली
- मेरवाडा – अजमेर – राजसमन्द के मध्य की पहाडियाँ
- मान देसरा पठार – चित्तौडगढ

अरावली का अध्ययन

अध्ययन की दृष्टि से अरावली को 3 भागों में बाँटा जाता है –

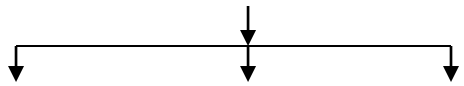

	उत्तरी अरावली	मध्य अरावली	दक्षिणी अरावली
विस्तार	जयपुर–झुंझुनूँ	अजमेर	सिरोही–राजसमन्द
सर्वोच्च चोटी	रघुनाथगढ	टॉडगढ	गुरूशिखर

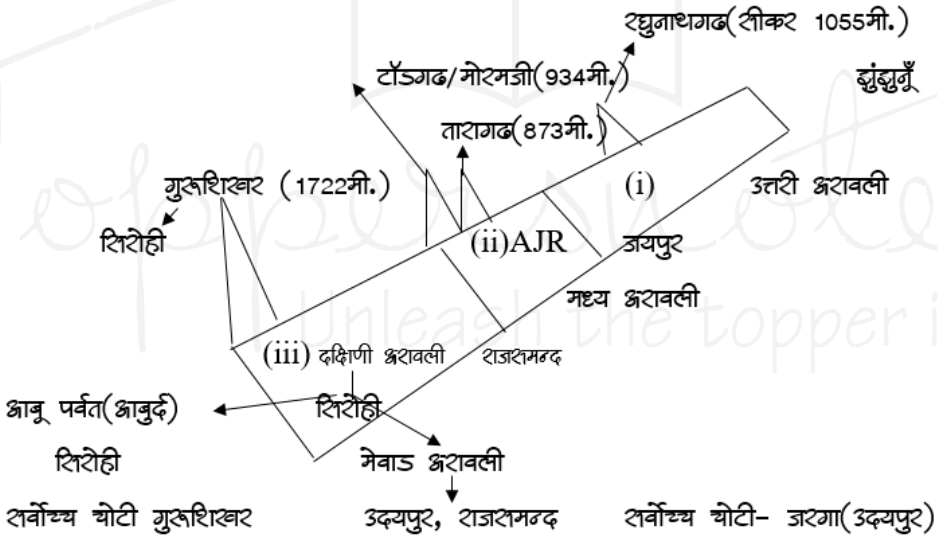

नोट:–

1. अरावली की सर्वाधिक ऊँचाई– सिरोही
   अरावली की सर्वाधिक विस्तार– उदयपुर
2. अरावली का सबसे कम विस्तार व न्यूनतम ऊँचाई– अजमेर
3 अरावली की सर्वोच्च चोटी(अवरोही क्रम में):–

	चोटी	स्थान	ऊँचाई
1	गुरूशिखर	सिरोही	1722 मी.
2	सेर	सिरोही	1597 मी.
3	देलवाडा	सिरोही	1442मी.
4	जरगा	उदयपुर	1431मी.
5	अचलगढ	सिरोही	1380 मी.
6	कुंभलगढ	राजसमन्द	1224 मी.
7	रघुनाथगढ	सीकर	1055 मी.
8	ऋषिकेश	सिरोही	1017 मी.
9	कमलनाथ	उदयपुर	1001 मी.
10	राजगढ	उदयपुर	938 मी.
11	मोरसजी/ टॉडगढ	अजमेर	934 मी.
12	खो	जयपुर	920 मी.
13	सायरा	उदयपुर	900 मी.
14	तारागढ	अजमेर	873 मी.
15	बिलाली	अलवर	775 मी.
16	रोजा भाकर	जालौर	730 मी.

अरावली की नाल/दर्रे

पर्वतों के मध्य नीचा और तंग रास्ता जो दो ओर के स्थानों को जोडता है इसे नाल कहा जाता है ।

प्रमुख नाल:-

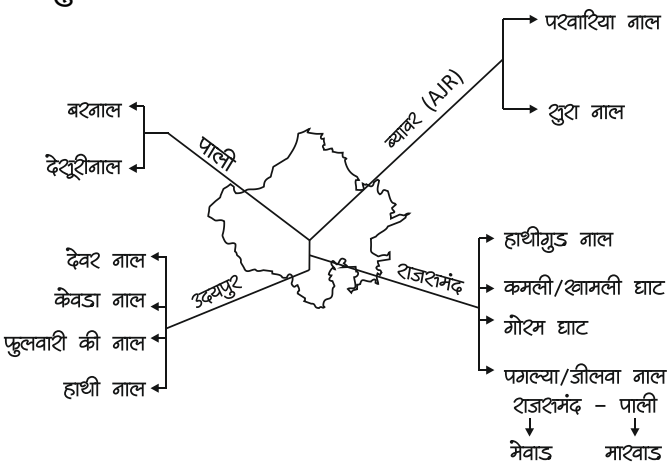

नोट:-

1. अरावली में सर्वाधिक नाल राजसमन्द में स्थित है।
2. फुलवारी नाल अभ्यारण्य से सोम, मानसी, वाकल नदियाँ बहती है ।

अरावली व राजस्थान की अन्य प्रमुख पहाडियाँ

भाकर	- सिरोही
पहाडी का नाम भाकर/भाकरी	- जालौर
पहाडी का नाम मगरा/मगरी	- उदयपुर
पहाडी का नाम डूंगर/डूंगरी	- जयपुर
त्रिकूट पहाडी.(सोनार दुर्ग)	- जैसलमेर
त्रिकूट पर्वत(कैलादेवी)	- करौली
चिडियाटूंक पहाडी(मेहरानगढ)	- जोधपुर
छप्पन की पहाडियाँ	- मोकलसर से सिवाणा (बाडमेर)
सर्वाधिक ग्रेनाइट	- ग्रेनाइट सिटी - जालौर
छप्पन पर्वत	- उदयपुर

नोट:-1

गाकोडा पर्वत- राजस्थान का मेवानगर

पिपलूद पहाडी-राजस्थान का लघु माउण्ट आबू

बाडमेर-जालौर की पहाडियों में सर्वाधिक "ग्रेनाइट व रायोलाइट चट्टानें" पाई जाती है ।

विशेष आकृति की पहाडियाँ

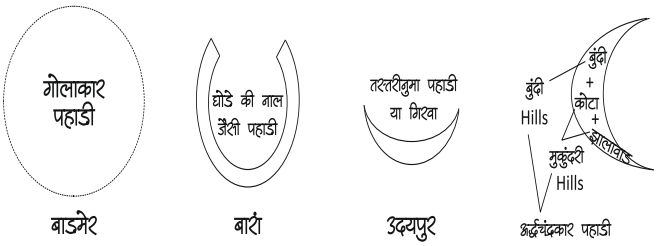

"गिरवा" का शाब्दिक अर्थ- पर्वतों की मेखला (श्रृंखला) जो द. अरावली में उदयपुर में स्थिति है ।

सुंडा पर्वत - जालौर

- सुन्धा माता मन्दिर
- प्रथम रोप-वे (2006)
- भालू संरक्षित क्षेत्र

भाकर - सिरोही

दक्षिणी अरावली में सिरोही में स्थित छोटी व तीव्र ढाल वाली पहाडियों को "भाकर" कहा जाता है ।

हिरण मगरी	- उदयपुर
मोती मगरी(फतेह सागर)	- उदयपुर
मछली मगरा(पिछोला झील)	- उदयपुर
द्वितीय रोप-वे(2008)	
जरगा	- उदयपुर
रागा पहाडी	- उदयपुर

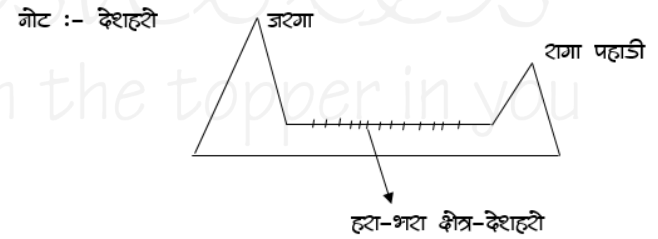

- दक्षिणी अरावली में जरगा-रागा पहाडियों के मध्य हरे-भरे क्षेत्र को उदयपुर में "देशहरी" कहा जाता है ।
- अरावली की दिशा :- दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व
- पीपली नाल (सिरोही) :- राजस्थान की सर्वाधिक ऊँचाई वाली नाल है ।
- बर नाल से पूर्णत: राजस्थान में अवस्थित सबसे लम्बा राजमार्ग एन. एच. 112 गुजरता है ।
- पर्वतों में स्थित संकरे मार्गो को दर्रे कहा जाता है जिन्हे हिमालय क्षेत्र में ला, अरावली क्षेत्र में नाल तथा पठारी क्षेत्र में घाट के नाम से जाना जाता है ।
- नाल को मान्यता RSRTC देती है ।

पूर्वी मैदानी प्रदेश

निर्माण – नदियों द्वारा लायी गई जलोढ मृदा से
ढाल – पूर्व दिशा की ओर ।

पूर्वी मैदानी प्रदेश की भौतिक विशेषताऐं निम्नांकित है–

1. यह राजस्थान का कुल क्षेत्रफल का लभगग 23 प्रतिशत तथा जनसंख्या का लगभग 39 हिस्सा धारण करता है ।
2. अरावली पर्वत माला के पूर्वी भाग में गंगा एवं यमुना के मैदानी भाग से मिला हुआ है । इसे यदि नदी बेसिन प्रदेश कहा जाए तो उपयुक्त होगा ।
3. विस्तार यह मुख्य रूप से अधोलिखित जिलो में विस्तृत है –
   अलवर, भरतपुर, करौली, दौसा, सवाईमाधोपुर, (ABCDS) जयपुर, दौसा, टोंक, डूंगरपुर, बाँसवाडा, प्रतापगढ आदि ।
4. जलवायु– यहाँ उपार्द्र जलवायु मिलती है ।
5. वर्षणः– 50–80 सेमी.
6. तापक्रम एवं वायुदाब व वायुवेग सामान्य पाये जाते है
7. वनस्पतिः– यहाँ प्रमुख रूप से धोक/धोकडा, शीशम, सागवान, साल टीक, आम, जामुन, पलाश, तेंदू, कत्था इत्यादि पाये जाते हैं ।
8. कृषि– यहाँ गेहूँ, चावल, चना, बाजरा, सरसो, विभिन्न दालें, गन्ना, ग्वार, धनिया, जौ इत्यादि की कृषि की जाती है ।
9. खनिजः– यहाँ प्रमुखतः आद्यात्विक खनिज पाये जाते है। संगमरमर यहाँ बहुतायत में पाया जाता है ।
10. मृदाः– यहाँ पर जलोढ या कांप एवं दोमट मिट्टी पायी जाती है ।
11. उच्चावचः– सामान्यतः चम्बल को छोडकर शेष मैदानी भाग मिलता है । जिसका ढाल पश्चिम से पूर्व एवं दक्षिण से उत्तर की ओर है।(अपवाह–माही)

पूर्वी मैदानी को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–

चम्बल बेसिन | बनास बाणगंगा बेसिन | माही बेसिन.

चम्बल नदी बेसिन

यह मुख्यतः कोटा, चित्तौडगढ, सवाईमाधोपुर, करौली, बूँदी एवं धोलपुर जिलों में आता है ।

इसका ढाल दक्षिण से उत्तर, पश्चिम से पूर्व तथा उत्तर पूर्व की ओर है ।
चम्बल की सहायक नदियाँ :– बनास, सीप, पार्वती, कालीसिंध, परवन ।

उच्चावच

(i) उत्खात स्थलाकृति – चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में नदी ढाल तीव्र होने और कोमल कठोर चट्टानों के समान्तर या एकान्तर क्रम से निर्मित गड्ढो वाली ऊबड–खाबड स्थलाकृति उत्खात कहलाती है ।

(ii) डांग – चम्बल नदी बेसिन क्षेत्र में पायी जाने वाली ऊबड खाबड उत्खात स्थलाकृति, बीहड भूमि तथा अनुपजाऊ गहरी भूमि क्षेत्र स्थानीय भाषा में डांग कहलाता है। यहां दस्यु सरगना निवास करते हैं ।

(iii) खादर – चम्बल नदी बेसिन में लगभग 5 से 30 मी. गहरे गड्डे एवं बीहडो से निर्मित भूमि स्थानीय भाषा में खादर कहलाती है ।

सर्वाधिक बीहड एवं डांग क्षेत्र करौली एवं सवाईमाधोपुर में है ।

बनास व बाणगंगा मैदान

(1) **बनास मैदान** :– दो भागों में बँटा हुआ है ।

दक्षिणी मैदान	उत्तरी मैदान
मेवाड मैदान	मालपुरा–करौली मैदान
विस्तारः– राजसमन्द	विस्तारः–अजमेर
भीलवाडा	टोंक
चित्तौड	सवाई माधोपुर

नोट :– बनास के मैदान में मुख्यतः ''भूरी मिट्टी'' पाई जाती है ।

(2) **बाणगंगा मैदान**
विस्तार– जयपुर–दौसा–भरतपुर
मिट्टी– जलोढ

(3) **पीडमॉट का मैदान**
अरावली पर्वत श्रेणी में देवगढ(राजसमंद) के पास का निर्जन का टीलेनुमा भाग पीडमॉट कहलाता है ।

(4) **माही बेसिन**
इसे ''माही का मैदान'', ''छप्पन का मैदान'' तथा 'बागड प्रदेश' भी कहते है । यह बेसिन डूँगरपुर, बाँसवाडा प्रतापगढ में छप्पन गाँवो एवं छप्पन नदी नालों के मध्य फैला हुआ है इस लिए इसे छप्पन का मैदान कहा जाता है ।